

इकाई-4

प्रश्न 1. यह बताएं कि उत्पादन गतिविधियाँ प्रकृति के सभी स्तरों को कैसे समृद्ध कर सकती हैं। कोई दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर—प्रकृतिक में, चार अलग-अलग प्रकार की संस्थाएँ हैं। एक इकाई में सामग्री शामिल है, दूसरी तरह के पौधे, जड़ी-बूटियाँ आदि हैं, तीसरे प्रकार में पशु और पक्षी हैं और चौथे प्रकार में मानव शामिल हैं। जब हम उनके अंतर्संबंध को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि सामग्री, पौधे और जानवर मानव सहित अन्य लोगों के लिए समृद्धि हैं। प्रकृति में चक्रिय और समृद्ध प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया के आधार पर उत्पादन स्वाभाविक रूप से प्रकृति में हो रहा है। मनुष्य को केवल प्रकृति की इस विशेषता को समझना होगा। विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उद्देश्य प्रकृति में चक्रिय प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाना और मानव को अन्य संस्थाओं के लिए अधिक से अधिक पूरा करना है। लेकिन हम पाएंगे कि मानव न तो मनुष्यों के लिए समृद्ध (पूर्ण) है और न ही अन्य तीन प्रकार की संस्थाओं के लिए। यदि हम केवल प्रकृति की प्रक्रियाओं को समझते हैं, तो हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के माध्यम से अपनी उत्पादन प्रणालियों को इस तरह से डिजाइन कर सकते हैं कि यह पूर्ति परेशान करने के बजाय बेहतर तरीके से सुनिश्चित हो।

प्रश्न 2. प्रकृति में सामंजस्य स्थापित करें। या, प्रकृति में सामंजस्य की व्याख्या करें।

उत्तर—सभी पारस्परिक रूप से परस्पर क्रिया करने वाली इकाइयों का समुच्चय-बड़ा या छोटा एक साथ प्रकृति कहलाता है। ये इकाइयाँ संख्या में अनंत हैं और हम आसानी से देख सकते हैं कि इन सभी इकाइयों में एक गतिशील संतुलन, आत्म नियमन मौजूद है। यह आत्म नियमन प्रकृति में सामंजस्य या संतुलन है। प्रकृति के नियम में एक अद्वितीय कारण और प्रभावी प्रणाली है जो चीजों के प्राकृतिक नियम के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद करती है।

प्रकृति में पाये जाने वाले चारों स्तर एक साथ एक-दूसरे के पूरक के रूप में विद्यमान रहते हैं। प्रत्येक स्तर बाकी अन्य तीनों स्तरों की इकाइयों के साथ अपने स्तर के अनुसार आदान-प्रदान करता है जिससे प्रकृति में सामंजस्य बना रहता है।

प्रश्न 3. सह-अस्तित्व से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर—प्रकृति में सह-अस्तित्व का मतलब है कि मानव सहित प्रकृति में सभी संस्थाओं के बीच एक संबंध और पूरकता है। सह-अस्तित्व एक ऐसी स्थिति है जिसमें दो या दो से अधिक समूह अपने मतभेदों का सम्मान करते हुए और अपने संबंधों को अहिंसक तरीके से हल करते हुए एक साथ रहते हैं। सह-अस्तित्व को कई तरीकों से परिभाषित किया गया है—

- (i) एक साथ (समय या स्थान में) और पारस्परिक सहिष्णुता में मौजूद होना।
- (ii) अंतर को पहचानना और जीना सीखना।
- (iii) उन व्यक्तियों या समूहों के बीच संबंध बनाना जिनमें से कोई भी पक्ष दूसरे को नष्ट करने की कोशिश नहीं करता है।

दुनिया विविधता से भरी है—विभिन्न राष्ट्र, संस्कृतियाँ, धर्म, समुदाय, भाषाएँ और मान्यताएँ हैं जो इस दुनिया में एक साथ रहती हैं। शांतिपूर्ण, सहजीवी सह-अस्तित्व दुनिया में सद्भाव की कुंजी है।

प्रश्न 4. 'सहजता' से आपका क्या तात्पर्य है? चार आदेशों में क्या सहजता है?

उत्तर—सहजता—सहजता का मतलब उन गुणों से है जो इकाई के लिए जन्मजात होते हैं। अस्तित्व में प्रत्येक इकाई एक सहजता, एक आंतरिक गुण दिखाती है जिसे इससे अलग नहीं किया जा सकता है। हम सिद्धान्त को जन्मजातता के रूप में जानते हैं। यह इकाई के लिए आंतरिक है।

सामग्री स्तर—जब हम कोयला जलाते हैं और यह जलना समाप्त हो जाता है और केवल कुछ राख बची रहती है और धुआँ निकल जाता है, तो ऐसा नहीं है कि कोयले में मौजूद मूलभूत कणों का अस्तित्व समाप्त हो गया है। हो सकता है कि वे उस समय आँख से दिखाई न दें, लेकिन उनका अस्तित्व बना रहता है। वे अभी भी अन्य पदार्थों के रूप में या गैसों के रूप में हैं। यह सभी भौतिक इकाइयों के साथ है। हम पदार्थ को नष्ट नहीं कर सकते, हम इसे केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। इस प्रकार, "अस्तित्व में" सभी सामग्री के लिए आंतरिक है, यह इसके लिए जन्मजात है। हम किसी चीज के 'अस्तित्व' को चीज से अलग नहीं कर सकते हैं। अतः सामग्री स्तर की सहजता 'अस्तित्व' है।

पादप/जैव क्रम—क्योंकि प्राणिक क्रम भौतिक क्रम का विकास है, इसलिए इसमें भी 'अस्तित्व' की सहजता है। इसके अतिरिक्त, यह 'विकास' को भी प्रदर्शित करता है। 'विकास' का यह सिद्धान्त इस स्तर की किसी भी इकाई से अलग नहीं किया जा सकता है। यदि यह प्राणिक आदेश का है, तो यह बढ़ेगा। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास एक पौधा है, तो आप उसे बढ़ने से नहीं रोक सकते। यह इसी तरह से सांस लेना और बदलना जारी रखेगा। जब तक आपके पास पौधा है, तब तक यह बढ़ेगा। पादप क्रम की सहजता में 'अस्तित्व' तथा 'वृद्धि' है।

पशु क्रम—पशु शरीर प्राणिक क्रम का विकास है और इसलिए यह क्रम पिछले क्रम की सहजता को जन्म देता है जिसका नाम है 'अस्तित्व' और 'वृद्धि'। यह शरीर के स्तर पर है, जो प्रकृति में फिजियो-केमिकल है। इसके अतिरिक्त, इस क्रम में सभी इकाइयों के पास 'मै' में 'जीने की इच्छा' है। वास्तव में इस क्रम में किसी भी इकाई को 'मै' से अलग नहीं किया जा सकता। यह इस क्रम में प्रत्येक इकाई के लिए आंतरिक है। इस क्रम की सहजता अस्तित्व, वृद्धि तथा जीने की इच्छा है।

मानव (ज्ञान) आदेश—जब हम मनुष्य को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि 'अस्तित्व' और 'विकास' मूल रूप से शरीर में मौजूद हैं, जैसे कि पशु शरीर में। हालांकि 'मै' के स्तर पर, 'जीने के लिए' के अलावा, एक इंसान की सहजता 'खुशी' के साथ जीने की इच्छा है। इस क्रम की सहजता अस्तित्व, वृद्धि, जीने की इच्छा तथा खुशी के साथ जीने की इच्छा है।

प्रश्न 5. एक इकाई का स्वभाव (प्राकृतिक विशेषता) क्या है? एक मानव आदेश के स्वभाव पर विस्तृत करें।

उत्तर—जब हम प्रकृति में विभिन्न स्तरों को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि प्रत्येक आदेश का एक निश्चित मूल्य है। मौलिक रूप से, यह अस्तित्व में उस स्तर की 'उपयोगिता' या 'भागीदारी' है। इस 'मूल्य' या 'भागीदारी' को 'प्राकृतिक विशेषता' या स्वभाव भी कहा जाता है।

- (i) भौतिक व्यवस्था का स्वभाव 'रचना/अपघटन' है,
- (ii) पादप/जैव स्तर का स्वभाव 'संरचना/अपघटन' और पोषण या बिगड़ना है।

(iii) पशु स्तर और मानव स्तर के स्वभाव को दो पहलुओं में समझा जा सकता है—शरीर और स्वयं। जानवरों के स्तर का स्वभाव संरचना/अपघटन, शरीर में पोषण/बिगाड़ना और 'मै' में उदारता/क्रूरता है। मानव आदेश का स्वभाव संरचना/अपघटन, पोषण बिगाड़ना (शरीर में) तथा दृढ़ता/वीरता ('मै' में)।

या तो अन्य प्राणिक इकाइयों का पोषण करता है या बिगाड़ता है। जैसे कि जब मैं सब्जी को पचाता हूँ, तो मैं पौधे को अवशोषित करता हूँ और फिर यह खराब हो जाता है, जबकि मेरे शरीर का पोषण होता है। मनुष्य में स्वयं ('मै') का स्वभाव दृढ़ता (धीरता), शौर्य वीरता और उदारता है।

प्रश्न 6. प्रकृति के चार आदेश क्या हैं? संक्षेप में उन्हें समझाइए।

उत्तर—सभी भौतिक वस्तुएँ जो ठोस, तरल या गैस अवस्था में हैं या तो जीवित हैं या निर्जीव हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से प्रकृति कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, सभी परस्पर क्रिया करने वाली इकाइयों का समुच्चय-बड़ा या छोटा, भावुक या जड़ एक साथ प्रकृति कहलाता है। ये इकाइयाँ संख्या में अनंत हैं और हम आसानी से देख सकते हैं कि इन सभी इकाइयों में एक गतिशील संतुलन, आत्म नियमन मौजूद है। प्रकृति के चार आदेश हैं—

सामग्री स्तर—महाद्वीपों का बड़ा भू-भाग, समुद्र और समुद्र, पहाड़ और नदी जैसे विशाल जल निकाय, ऊपर का वातावरण, नीचे धातुओं और खनिजों का ढेर, घने गैसों और जीवाश्म ईंधन, जो पृथ्वी की सतह से नीचे हैं। सितारे, ग्रह, चंद्रमा, खगोलीय पिंड आदि सामग्री स्तर में आते हैं।

प्राणिक स्तर—हमारी भूमि का द्रव्यमान घास और छोटी झाड़ियों से ढका हुआ है और वे पूरी मिट्टी पर अस्तर का निर्माण करते हैं। समुद्र में वनस्पतियों के साथ-साथ झाड़ियाँ, पौधे और पेड़ विशाल वन बनाते हैं। यह सब संयंत्र/जैव स्तर या प्राण अवस्था है।

पशु क्रम—पशु और पक्षी तीसरे सबसे बड़े स्तर का निर्माण करते हैं और हम उन्हें पशु स्तर या जीव अवस्था कहते हैं।

मानव आदेश—मानव सबसे छोटा स्तर है और उन्हें मानव स्तर या ज्ञान अवस्था के रूप में जाना जाता है। मानव स्तर की तुलना में जानवरों की मात्रा अधिक होती है।

प्रश्न 7. आप उदाहरणों के साथ प्रकृति के चार क्रमों में परस्पर जुड़ाव और पारस्परिक पूर्ति कैसे दिखाएँगे?

उत्तर—प्रकृति में, सभी इकाइयाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और एक-दूसरे को पूरा कर रही हैं। मनुष्य का संबंध अन्य सभी मनुष्यों से है। इस आधार पर, हमारे पास सभी के लिए भावनाएँ हैं। मानव, अस्तित्व में सभी भौतिक इकाइयों से जुड़ा हुआ है।

पदार्थ स्तर व प्राणिक स्तर—पदार्थ स्तर पोषक तत्व मिट्टी, मिनरल्स आदि के रूप में प्राणिक स्तर को प्रदान करता है, जबकि बदले में प्राणिक स्तर पदार्थ स्तर को और अधिक न्यूट्रिएंट्स देता है, जिससे मिट्टी समृद्ध होती है। पौधे मिट्टी की विभिन्न परतों के माध्यम से पोषक तत्वों को स्थानांतरित करने में मदद करते हैं। पौधों की जड़ें मिट्टी को एक साथ रखती हैं और मिट्टी को कटाव से बचाती हैं। पौधे ऑक्सीजन/कार्बन डाइऑक्साइड का उत्पादन करते हैं और इस प्रकार सामग्री स्तर को गति देने में मदद करते हैं। यहाँ एक पारस्परिक निर्भरता और सह-अस्तित्व है।

पदार्थ स्तर, प्राणिक स्तर, पशु स्तर—सामग्री स्तर सभी जानवरों, पक्षियों और मछलियों की आवाजाही के लिए आधार प्रदान करता है तथा पानी, ऑक्सीजन और अन्य गैसों उपलब्ध कराता है। इसी समय पशु स्तर मिट्टी को अपने उत्सर्जन के साथ समृद्ध करने में मदद करता है और ये उत्सर्जन पौधों को पोषक तत्वों के साथ मदद करते हैं। जैव स्तर जानवरों, पक्षियों और मछलियों के लिए भोजन प्रदान करता है। पशु स्तर प्राणिक स्तर के फूलों के परागण में मदद करता है।

पदार्थ स्तर, प्राणिक स्तर, पशु स्तर व मानव स्तर—इन तीनों स्तरों को परस्पर पूरा करने के लिए हम मनुष्यों की भी स्वाभाविक स्वीकृति है। हालाँकि, हम इस पारस्परिक पूर्ति को सुनिश्चित करने में सक्षम नहीं हैं। हम मिट्टी और खनिजों और धातुओं के लिए सामग्री के स्तर पर निर्भर हैं, लेकिन केवल मिट्टी को प्रदूषित करते हैं और जीवाश्म ईंधन को नष्ट करते हैं, हम अपने भोजन के लिए पौधों पर निर्भर हैं और एक साथ बड़े पारिस्थितिकी तंत्र जंगलों, पौधों और जड़ी-बूटियों को कई प्रजातियों को नष्ट कर दिया है। हम अपने उत्पादन और परिवहन गतिविधियों को पूरा करने के लिए जानवरों पर निर्भर हैं,

लेकिन जानवरों की कई प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं, और आज हम जानवरों के प्रति हमारी क्रूरता के लिए जाने जाते हैं। हम देख सकते हैं कि मानव के आदेश को छोड़कर प्रकृति के सभी आदेशों में परस्पर संबंध और परस्पर पूर्ति है।

प्रश्न 8. बताएँ कि प्रकृति में पुनरावर्तन और स्व-नियमन कैसे होता है।

उत्तर—कई चक्रीय प्रक्रियाएँ हैं जिन्हें हम प्रकृति में देख सकते हैं। उदाहरण के लिए पानी का चक्र (वाष्पीकरण, संघनन, वर्षण)। ये चक्र इन सामग्रियों को पृथ्वी पर स्व-विनियमित रखते हैं। पौधों और जानवरों की नस्लें अपने पर्यावरण में समान रूप से स्व-विनियमित होती हैं। एक जंगल में, पेड़ों की वृद्धि इस तरह से होती है ताकि मिट्टी, पौधों और जानवरों की मात्रा संरक्षित रहे। ऐसा कभी नहीं होता है कि पेड़ों की संख्या बढ़ जाती है और पेड़ों के लिए मिट्टी की कमी हो जाती है। पौधों और जानवरों दोनों की वृद्धि के लिए स्थितियों की उपयुक्तता प्राकृतिक अनुपात को बनाए रखते हुए प्रकृति में स्व-विनियमित है। इस घटना को आत्म-नियमन कहा जाता है। पशुओं की एक ही नस्ल में, नर और मादा की संख्या सन्तुलन में होती है, ताकि प्रजातियों की निरंतरता अपने आप सुनिश्चित हो। मनुष्यों के साथ भी ऐसा होता है, लेकिन अमानवीय प्रथाओं के कारण पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या में कमी आई है। इन दो विशेषताओं (चक्रीय प्रकृति और आत्म-नियमन) से हमें सद्भाव के बारे में पता चलता है।

प्रश्न 9. अनुरूपता से आपका क्या तात्पर्य है? चार आदेशों में अनुरूपता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रत्येक इकाई अनुरूपता या अनुसांगिता के सिद्धान्त की पुष्टि करती है। इसका अर्थ है कि इकाई की मौलिक प्रकृति की निरंतरता संरक्षित है।

(i) **सामग्री क्रम—**भौतिक इकाई की मौलिक प्रकृति की निरन्तरता भौतिक और रासायनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संरक्षित है। उदाहरण के लिए लोहा को लें। लोहे का प्रत्येक परमाणु 'लोहे' की संवैधानिक संरचना के अनुरूप है। लोहे का कोई परमाणु नहीं है जो लोहे के दूसरे परमाणु के विपरीत हो। हम इसे 'संविधान अनुरूपता' कहते हैं। सामग्री आदेश संविधान अनुरूपता प्रदर्शित करता है।

(ii) **संयंत्र/जैव क्रम—**एक नीम का बीज हमेशा एक नीम के पौधे को अंकुरित करेगा। यह हम सभी जानते हैं कि इसके फल, इसके पत्ते, पत्तियों का स्वाद, पत्तियों का रंग सभी इसके नीम से जुड़ाव की जानकारी देते हैं। हर नीम के पौधे की यह बुनियादी जानकारी बीज में संग्रहीत होती है। इसलिए हम कहते हैं कि एक पौधा बीज के अनुरूप है, या बीज अनुरूपता है। यह 'बीज अनुरूपता' विधि वह साधन है जिसके द्वारा प्रकृति में पौधों की प्रजातियों की निरन्तरता बनी रहती है।

(iii) **पशु क्रम—**हम देखते हैं कि एक गाय हमेशा एक गाय की तरह होती है, और एक कुत्ता हमेशा एक कुत्ते की तरह होता है। प्रत्येक जानवर अपने वंश के अनुरूप है। जानवर कैसे हैं, उनका व्यवहार, उनके वंश के अनुसार है, वे जिस वंश से आते हैं। इसलिए, हम कहते हैं कि एक जानवर अपनी नस्ल के अनुरूप है, या उसके पास 'नस्ल अनुरूपता' है। यह नस्ल अनुरूपता विधि वह तंत्र है जिसके द्वारा प्रकृति में किसी पशु प्रजाति की निरन्तरता बनी रहती है।

(iv) **मानव (ज्ञान) आदेश—**हम देख सकते हैं कि हम मनुष्य हमारे वंश या नस्ल के अनुसार नहीं हैं, जैसे कि जानवरों में, जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अपने माता-पिता से कुछ उठा सकते हैं, लेकिन हम आमतौर पर उनसे कई मायनों में अलग होते हैं। हम मनुष्य अपनी कल्पनाओं, इच्छाओं, विचारों और 'मैं' में चयन के अनुसार बनते हैं। हम इन्हें संस्कार कहते हैं। इसलिए, हम कहते हैं कि मनुष्य अपने संस्कार के अनुरूप है या 'संस्कार अनुरूप' है।

प्रश्न 10. प्रकृति में चार आदेशों में मूल गतिविधि की व्याख्या करें।

उत्तर—भौतिक और प्राणिक क्रम में, केवल पहचान और पूर्ति है। ऐसी इकाइयों के पास ग्रहण करने और जानने की गतिविधियाँ नहीं हैं। उदाहरण के लिए, हाइड्रोजन और ऑक्सिजन एक दूसरे के संबंध को पहचानते हैं, और पानी बनाने के लिए गठबंधन करते हैं। एक ईंट और दूसरी ईंट का एक निश्चित संबंध है, इसे पहचानने और एक इमारत बनाने की व्यवस्था की जाती है। एक पौधा सूर्य और पानी के साथ संबंध को पहचानता है, और उसके अनुसार कार्य करके उसे पूरा करता है। इस तरह की गतिविधियाँ हर समय एक ही तरह से होती हैं, यहाँ कोई चयन शामिल नहीं है। एक पौधा सूरज की ओर मुड़ने या न निकलने, पानी को अवशोषित करने या न लेने को विकल्प नहीं चुनता है। इसी तरह, आपके कमरे में पंखा

दक्षिणावर्त या विरोधी घड़ी की दिशा में घूमना नहीं चुनता है। यह मोटर में घुमाव के अनुसार बदल जाता है। कोई विकल्प नहीं। जब हम जानवरों और मनुष्यों को देखते हैं, तो हम चयन करते हैं। यह मानव व जानवरों की गतिविधि है।

प्रश्न 11. कथन पर टिप्पणी करें—“प्रकृति सीमित है और अंतरिक्ष असीमित है।”

उत्तर—प्रकृति के चार आदेश हैं और प्रत्येक क्रम में इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई आकार में सीमित है। आकार वास्तव में छोटा (परमाणु) होने से लेकर वास्तव में बड़ा (आकाशगंगा) तक होता है। प्रत्येक इकाई आकार में सीमित है, चाहे वह सबसे छोटा कण हो या सबसे बड़ी आकाशगंगा। दूसरी ओर अंतरिक्ष, असीमित है। अंतरिक्ष का कोई 'आकार' नहीं है, इकाइयों के विपरीत, यह घिरा हुआ नहीं है। अंतरिक्ष के लिए कोई शुरुआत या अंत नहीं है, जैसा कि इकाइयों में है। उदाहरण के लिए जब हम एक पुस्तक लेते हैं, हम कहते हैं कि पुस्तक आकार में 'सीमित' है। जब हम स्पेस लेते हैं, तो ऐसी कोई बात नहीं है। हमारे पीछे, आगे, ऊपर, नीचे चारों ओर खाली जगह है। हमें लगता है कि अंतरिक्ष व्याप्त है यह सर्वव्यापी है। दूसरी ओर इकाइयाँ सर्व-व्यापक नहीं है। इसीलिये इकाइयों को सीमित व अन्तरिक्ष को असीमित कहते हैं।

प्रश्न 12. हम यह कैसे कह सकते हैं कि 'प्रकृति स्वयं संगठित है और अंतरिक्ष में आत्म-संगठन उपलब्ध है।

उत्तर—हर इकाई एक संगठन है। एक इकाई अन्य इकाइयों को पहचानती है और एक बड़ा संगठन बनाने के लिए जोड़ती है। परमाणु से शुरू होकर, बड़ी आकाशगंगा तक, यह संगठन एक आत्म-संगठन के रूप में आगे बढ़ता है। हर स्तर पर हमें आत्म-संगठन मिलता है। उप-परमाणु के कण एक-दूसरे को पहचानते हैं और परमाणुओं को बनाने के लिए एक साथ आते हैं। कोशिकाएँ एक-दूसरे को पहचानती हैं और अंगों और एक शरीर जैसे संगठन का निर्माण करती हैं। ग्रहों के निकाय, सौर मंडल, आकाशगंगा भी बड़े संगठन हैं। हम इसका आयोजन नहीं कर रहे हैं।

मनुष्य भी शरीर के स्तर पर आत्म-संगठित हैं। हम शरीर को व्यवस्थित नहीं कर रहे हैं। हम हृदय, गुदें, फेफड़े, आँखें, मस्तिष्क, हाथ, पैर आदि के बीच समन्वय के लिए कुछ भी नहीं कर रहे हैं। ये सभी मिलकर काम कर रहे हैं। यह आत्म-संगठन अंतरिक्ष में होने वाली इकाइयों के लिए उपलब्ध है। इसलिए, अंतरिक्ष के लिए, हम कहते हैं कि 'स्व-संगठन उपलब्ध है'।

प्रश्न 13. 'अस्तित्व सह-अस्तित्व है'। अपना सुझाव दीजिये।

उत्तर—सभी इकाइयाँ मिलकर प्रकृति का निर्माण करती हैं। प्रकृति की सभी इकाइयाँ अंतरिक्ष में मौजूद हैं जिन्हें समझना एक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता है। अस्तित्व में प्रकृति के अलावा कुछ भी नहीं है।

अस्तित्व = अस्तित्व + सब-कुछ, जो कुछ भी मौजूद है।

↓ ↓

सामंजस्य होना

हम इकाई को ऐसी चीज के रूप में परिभाषित करते हैं जो आकार में सीमित है। मिट्टी के कण से लेकर सबसे बड़े ग्रह तक सभी आकार में सीमित हैं, यानी छह तरफ से बंधे हैं। इसलिए, अब तक हम जिन सभी 'चीजों' का अध्ययन कर रहे हैं—मनुष्य, जानकर, पदार्थ की गांठ और साथ ही विभिन्न परमाणु और अणु, सभी 'इकाइयाँ' हैं। हम उन्हें इस तरह से पहचान सकते हैं, वे गणनीय हैं।

लेकिन एक और 'वास्तविकता' है जिसे 'अन्तरिक्ष' कहा जाता है। हम आमतौर पर इस 'वास्तविकता' पर ध्यान नहीं देते हैं, क्योंकि यह 'इकाई' नहीं है। हम इसे छू या सूँघ नहीं सकते हैं। हम आमतौर पर 'इसके माध्यम से देखते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि इसका कोई अस्तित्व नहीं है। हर जगह-जगह मौजूद है। सह-अस्तित्व एक ऐसी स्थिति है जिसमें दो या दो से अधिक समूह अपने मतभेदों का सम्मान करते हुए और अपने संघर्षों को अहिंसक तरीके से हल करते हुए एक साथ रह रहे हैं।

जब हम आस-पास के अस्तित्व को देखते हैं, तो पहली चीज जो देखते हैं वह है अंतरिक्ष और फिर हम अंतरिक्ष में इकाइयों को देखते हैं। प्रत्येक दो इकाइयों के बीच एक स्थान होता है। अंतरिक्ष में इकाइयाँ मौजूद हैं। यदि हम इसे परिभाषित करते हैं, तो हम कहेंगे कि अस्तित्व में दो प्रकार की वास्तविकताएँ हैं और ये हैं—अंतरिक्ष और इकाइयाँ (अंतरिक्ष में)। अतः यह सम्पूर्ण अस्तित्व तभी साकार होता है जब इकाई व अन्तरिक्ष सह-अस्तित्व में हों।